जम्मू-कश्मीर में राम-काव्य

प्रो. रसाल सिंह

एवं

आर. आशा

भारतीय चेतना में श्रीराम न केवल ईश्वर के रूप में विराजमान हैं, बल्कि संपूर्ण मानव-जाति को ज्ञान और आदर्श का पाठ पढ़ाने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भी हैं। राम शब्द अपनी परिपूर्णता में भारतीय संस्कृति को दर्शाता है। उन्होंने पूरे देश को एकसूत्र किया है। संपूर्ण भारतीय समाज में उनका आदर्श रूप पूर्व से लेकर पश्चिम तथा उत्तर से लेकर दक्षिण के सभी हिस्सों में भिन्न स्वरूपों में उपस्थित है।

"रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं॥
नाना भाँती राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा॥"[1]

अर्थात् संसार में राम कथा की सीमा नहीं है। उनके कई अवतार हुए हैं तथा सौ करोड़ और अपार रामायण हुए हैं।

राम की तरह उनकी काव्य रूपी गंगा भी निरंतर प्रवाहमान रही है। इंडोनेशिया के 'रामायण काकावीन', कंपूचिया के 'रामकेर्ति', लाओस के 'फ्रलक-फ्रलाम'(रामजातक नाम से प्रसिद्ध), बर्मा के 'रामवत्थु', मलेशिया के 'हिकायत सेरीराम' तथा तिब्बत के 'किंरस-पुंस-पा' आदि के माध्यम से हमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम-काव्य के सन्दर्भ देखने को मिलते हैं। इनके अलावा नेपाल, जापान, श्रीलंका आदि देशों में भी यह परंपरा देखी जा सकती है। ऐसे में भारतीय भाषाओं में उनकी प्रसिद्धि का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। तमिल, तेलुगु, असमिया, उड़िया, बांग्ला, मराठी, गुजराती, कन्नड़ आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्राचीन काल से ही राम-काव्य का लेखन देखने को मिलता है। तमिल में 'कंब रामायण', असमिया में 'कीर्तनिया रामायण', उड़िया में 'विलंका रामायण', बांग्ला में 'कृत्तिवासी रामायण', मराठी में 'भावार्थ रामायण', पंजाबी में 'गोबिंद रामायण', तेलुगु में 'भास्कर रामायण' आदि प्रमुख रहे हैं। भारत का मुकुटमणि जम्मू-कश्मीर भी वैष्णव भक्ति धारा से अछूता न रह सका। यहाँ की दो मुख्य भाषाओं, डोगरी और कश्मीरी में राम-काव्य का स्वरूप देखने को मिलता है। वैसे तो कश्मीर में संस्कृत भाषा में बहुत पहले इसका सूत्रपात हो चूका था, जब कवि भवभूति ने आठवीं शताब्दी के पूर्वार्ध्द में ही 'महावीर चरित' और 'उत्तररामचरित' की रचना कर दी थी। 11वीं शताब्दी में क्षेमेन्द्र कृत 'दशावतारचरित' और 'रामायण मंजरी' भी प्रकाश में आए। लेकिन ये रचनाएं संस्कृत में थीं। कश्मीरी भाषा में राम-काव्य का सूत्रपात पं. प्रकाशराम कुरिगामी द्वारा रचित 'रामावतारचरित' (जिसे 'प्रकाश रामायण' भी कहा जाता है) से हुआ। कुछ विद्वानों के अनुसार इसके लेखक दिवाकर प्रकाश भट्ट हैं।

कश्मीर सदियों से शैवमत का प्रधान केंद्र रहा है। यही कारण है कि यहाँ रामभक्ति का विकास एक सशक्त सम्प्रदाय के रूप में नहीं हो पाया। यहाँ भगवान श्रीराम को विष्णु के अवतार के रूप में पूजा गया। वैष्णव भक्ति की जो धारा प्रवाहित हुई, उसके पीछे क्या कारण थे, यह जानने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक हो जाता है। इस सन्दर्भ में डॉ. शशिशेखर तोषखानी कहते हैं, "अठारहवीं शती में अफ़गानों ने निरंकुश हिंसा, लूटपाट और धार्मिक अत्याचारों से लोकचित्त को इस सीमा तक आतंक-कंपित कर दिया था कि पौराणिक मानसिकता से संबद्ध हिन्दू मन में असुर शब्द का अर्थ क्रूरता और नृशंसता के संपूर्ण आयामों के साथ साकार हो उठा। जीवन की वास्तविक समस्याओं और सामाजिक विषमताओं से मुँह मोड़कर किसी अतिमानवीय शक्ति के लोक-संरक्षक बिंब का प्रक्षेप और उस शक्ति के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव निराश और भयभीत हिन्दू मन के लिए विशेष रूप से ग्राह्य हुआ। अवतारवाद ने राम और कृष्ण के चरित्र के माध्यम से इस मन को लोकोत्तर स्तर पर मुक्ति का आश्वासन दिया। लीला काव्य की मूल प्रेरणा जो भी रही हो, उसके अंतर्गत आने वाली अधिकांश कृतियों में भावात्मक धरातल इतना विस्तृत है कि उसे मात्र धार्मिक काव्य कहकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। उन्नीसवीं शती या फिर सत्रहवीं-अठारहवीं शती में अपने प्रस्फुटन के बाद यह काव्य-प्रवृत्ति बीसवीं शती के प्रारंभिक दशकों तक अपना विस्तार पाती है।"[4] कह सकते हैं कि भक्ति आन्दोलन ने मध्य भारत को जहाँ 16 वीं शती में प्रभावित किया, वहीं कश्मीर में देर से ही सही, लेकिन 19 वीं शताब्दी में प्रवेश कर राम एवं कृष्ण कथा विषयक सुन्दर कृतियों का प्रस्फुटन हुआ। कश्मीरी भाषा के मध्यकालीन साहित्य के इतिहास के सन्दर्भ में शिबन कृष्ण रैणा कहते हैं, "1750 से लेकर 1900 ई. तक रचे गए कश्मीरी साहित्य में प्रमुखतः दो प्रकार की धाराएँ देखने को मिलती हैं। प्रथम के अंतर्गत फ़ारसी मसनवियों के आधार पर कश्मीरी में रचित अथवा अनुवादित प्रेम-काव्य मिलते हैं और दूसरी के अंतर्गत राम एवं कृष्ण भक्ति-काव्य।"[3]

कश्मीरी भाषा में रचे गए राम-काव्य का आधार वाल्मीकि कृत रामायण या तुलसी कृत 'रामचरितमानस' रहा है। 19वीं शताब्दी के आसपास पं. प्रकाशराम ने 'रामावतारचरित' की रचना की, जो सात कांडों में विभक्त है। प्रकाशराम ने लोक-रक्षक, भू-उद्धारक और पाप-निवारक राम की कल्पना की है। वे दशरथ पुत्र होते हुए भी विष्णु के अवतार हैं एवं पृथ्वी पर पाप का अंत करने के लिए अवतरित हुए हैं, "रावण के हेतु अवतारी बनकर आए/भूमि का भार हरने को आये।"[4] इसमें अधिकांश कथा प्रसंग वाल्मीकि कृत रामायण से लिए गए हैं, लेकिन स्थानीयता का विशेष पुट लेकर यह विशिष्ट बन पड़ा है। यद्यपि इस ग्रन्थ में दशरथ-यज्ञ से लेकर माता सीता के भूमि-प्रवेश तक बहुत सी कथा वाल्मीकि कृत रामायण के अनुसार है, लेकिन कवि की मौलिक कल्पना का उदाहरण उनके परिवर्तित और परिवर्धित कथा प्रसंगों में देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर मंदोदरी के गर्भ से सीता का जन्म, लव-कुश का राम की सेना से युद्ध, रावण के चित्र के

कारण सीता का त्याग, वाल्मीकि द्वारा कुश की सृष्टि आदि। इनके अलावा सीताजी के कहने पर राम का दशरथ के लिए पिंडदान करना, रावण द्वारा जटायु को पत्थर खिलाना, नल द्वारा समुद्र में फेंके गए पत्थरों का तैरना, लंका में माता सीता की खोज के दौरान नारद द्वारा हनुमान को रावण-चरित सुनाना, रावण-दरबार में अंगद के स्थान पर हनुमान के पैर को असुरों द्वारा पूरा ज़ोर लगाने पर भी न उठा पाना, रावण द्वारा युद्धनीति का प्रयोग कर सुग्रीव को ख़त लिखकर अपने पक्ष में करने की कोशिश करना, युद्ध के समय निराश रावण की कैलाश-यात्रा आदि प्रसंग भी उल्लेखनीय हैं। कवि की विलक्षण काव्य प्रतिभा के चलते अधिकांश प्रसंग अत्यंत मर्मस्पर्शी एवं हृदयग्राही बन पड़े हैं। राम के वनगमन के समय माता कौशल्या की विरह-व्यथा का बड़े मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है-

"कौशल्यायि हंदि गोबरो
करयो गूर गूरो।
परयो राम रामो
कर यो गूर गूरा...
कौतू गोहम च त्र `विथ
कसू ह्यक हाल ब बोविथ
अनी कुस मननोविथ
करयो गूर गूरा॥"[5]

इस रचना पर 'अध्यात्म रामायण' का भी प्रभाव देखने को मिलता है। प्रकाश राम द्वारा रचित 'लवकुशचरित' भी इसी रचना के परिशिष्ट में जोड़ दी गयी है।

इसके अलावा शंकर कृत 'शंकर रामायण', आनंदराम राजदान कृत 'आनंद रामवतारचारित', विष्णु कौल कृत 'विष्णुप्रताप रामायण', नीलकंठ शर्मा कृत 'शर्मा रामायण', पं. ताराचंद कृत 'ताराचंद रामायण', पं. अमरनाथ कृत 'अमर रामायण' भी प्रमुख हैं। शंकर रामायण पाँच कांडों में विभक्त एक ऐसी रचना है, जिसमें राम के जन्म से लेकर उनके वैकुंठ-धाम तक की यात्रा तक के प्रसंगों का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण से प्रेरित इस रचना में कुल पदों की संख्या 4410 हैं। प्रकाशराम के रामावतारचरित की तरह इसमें भी कल्पना युक्त मौलिक प्रसंगों का समायोजन किया गया है।

विष्णु कौल द्वारा 1913 ई. में रचित 'विष्णुप्रताप रामायण' का कथानक भी वाल्मीकि रामायण से प्रभावित है। पाँच कांडों में विभक्त इस रचना को उन्होंने तत्कालीन डोगरा शासक महाराजा प्रताप सिंह को समर्पित किया। इसी क्रम में तुलसी कृत रामचरितमानस से प्रभावित नीलकंठ शर्मा का 'शर्मा रामायण' भी उल्लेखनीय है, जो आठ कांडों में विभक्त है। इन प्रबंधकृतियों के अलावा कुछ स्फुट काव्य-रचनाएँ भी

उपलब्ध हैं, जिनमें राम-नाम की महिमा का बखान किया गया है। इस सन्दर्भ में लक्ष्मण रैणा 'बुलबुल' और कृष्ण राजदान के नाम उल्लेखनीय हैं।

कश्मीरी की तरह डोगरी में भी राम-काव्य अत्यंत लोकप्रिय रहा है। इस संदर्भ में शंभुनाथ शर्मा कृत 'रामायण', दीनू भाई पंत कृत 'अयोध्या नाटक', बिशन सिंह दर्दी कृत 'बनवास', प्रकाश प्रेमी कृत 'वेदन धरती दी', राम नाथ शास्त्री द्वारा रचित 'रामायण' आदि के नाम लिए जा सकते हैं। जम्मू शहर में स्थित रघुनाथ मंदिर एवं यहाँ अनुरक्षित पांडुलिपियों का पुस्तकालय हमारे गौरवशाली इतिहास का प्रमाण है। जम्मू-कश्मीर में राम लीलाओं का भी खासा प्रचालन रहा है। जम्मू संभाग में जहाँ आज भी रामलीलाएँ मंचित होती हैं, वहीं कश्मीर में भी 90 के दशक तक नवरात्र के दौरान नियमित रूप से राम लीला नाटक खेले जाते थे। लेकिन बाद की राजनीतिक परिस्थितियों ने सब कुछ बदल डाला।

जम्मू-कश्मीर में राम-काव्य परंपरा को लेकर भिन्न मत प्रचलित हैं। मृदु राय का मानना है कि "कश्मीर घाटी में राजनीतिक नियंता को बनाये रखने के लिए जम्मू के हिन्दू महाराजाओं ने रघुनाथ मंदिर जैसे राम मंदिरों की स्थापना की। राम पंथ को तांत्रिक शैव परंपरा और कश्मीरी पंडितों के मंदिरों के साथ प्रभाव में लाया गया।"[6] कवि लेखक रंजीत होसकोटे भी इससे सहमति व्यक्त करते हुए कहते हैं, "कश्मीर में श्रीराम का पंथ हाल ही का है। पंडित मुख्य रूप से अभिविन्यास में शैव हैं; डोगरा शासकों ने, घाटी में उनके प्रवेश पर, पंडितों से, उनके (डोगरा) वैष्णव प्रवृत्तियों के लिए एक निश्चित आज्ञाकारिता की मांग की। इसने कश्मीर में आस्तिक परंपरा के लिए एक प्रमुख जोड़ को चिह्नित किया। राम के आगमन से पहले, हिन्दू देवताओं के सभी देवताओं को शिव और शक्ति के रूप में पूजा जाता था।" वहीं इसके बरक्स प्रो. अशोक कौल का मानना है, "मेरे विचार से, कश्मीर में रामायण कश्मीरी शैव परंपरा जितनी पुरानी है, क्योंकि यह पीढ़ी दर पीढ़ी चली है। राम आपके कर्मों के लिए खड़े हैं। हम इकबाल को एक कश्मीरी कवि मानते हैं, और वह राम को 'इमाम-ए-हिन्द' मानते थे।" उन्होंने डॉ. सर मोहम्मद इकबाल को संदर्भित किया है, जिसमें वे कहते हैं,

"है राम के वजूद पै हिन्दोस्ताँ को नाज।
अहल ए नजर समझते उन्हें इमाम ए हिन्द॥"

राम कथा की प्रसिद्धि को लेकर फ़ादर कामिल बुल्के का भी मत उल्लेखनीय है, "रामकथा प्रारंभ से ही भारत की संस्कृति में इतनी फैल गई कि राम ने उस समय के तीन प्रचलित धर्मों में एक निश्चित स्थान प्राप्त किया—ब्राह्मण धर्म में विष्णु के अवतार, बौद्ध धर्म में बोधिसत्व, तथा जैन धर्म में आठवें बलदेव के रूप में। आगे चलकर साहित्य की प्रत्येक शाखा में, अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में, भारत के निकटवर्ती देशों में सर्वत्र रामकथा का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।"[7]

मोटे तौर पर कहा जाये, तो भगवान श्रीराम कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पूजे जाते हैं। उनके भक्त उनके विविध रूपों की आरधना करते हैं। कौशलपुरी में उनके बाल रूप की आराधना की जाती है, तो मिथिला में वे पाहुन (दूल्हा) स्वरूप पूजे जाते हैं। दंडकारण्य चित्रकूट के आस-पास उनके वनवासी रूप की पूजा होती है, तो दक्षिण में कोदंडकारी रूप की।

जम्मू-कश्मीर की बात की जाये, तो यहाँ उनकी आराधना विष्णु के अवतार के रूप में हुई। नीलमत पुराण में विष्णु के जिन अवतारों की बात कही गयी है, उनमें आठवें अवतार के रूप में श्री राम का भी उल्लेख है।

"चतुर्विंशतिसंख्यायां त्रेतायां रघुनंदनः।
हरिर्मनुष्यो भविता रामो दशरथात्मजः।।"[8]

अर्थात् चौबीसवें त्रेतायुग में विष्णु रघुवंश के पुत्र अर्थात् रघुकुलोत्पन्न दशरथ के पुत्र राम मनुष्य के रूप में उत्पन्न होंगे। माता सीता को भी देवी स्वरूप पूजने की भी बात की गयी है,
"रामपत्नी तथा पूज्या सीता देवी प्रयत्नतः।"[9]

कह सकते हैं कि नीलमत पुराण में राम के जीवन से सम्बंधित घटनाओं का ज़िक्र तो नहीं हुआ है, लेकिन सीता, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का उल्लेख रामकथा को संदर्भित करता है। कश्मीर के इतिहास का प्रामाणिक दस्तावेज कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' में भी रामायण की घटनाओं का प्रचुर मात्रा में उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार कश्मीर में रामायण पाठ की परंपरा दूसरी शताब्दी से भी पहले से मौजूद थी।

इन सब के अलावा कश्मीरी भाषा में ऐसी कई सारी कहावतें हैं, जो सीधे राम कथा से जुड़ती हैं। कश्मीरी में एक इन्द्रधनुष 'राम राम भद्रिन धोने' के नाम से जाना जाता है। किसी को पीटने को 'गदापथ करुण' कहा जाता है। किसी महिला द्वारा पीड़ित को 'सीतायई हेंड सफर' कहा जाता है। कश्मीरी जनमानस में प्रचलित ये कहावतें इस बात की ओर इंगित करते हैं कि यहाँ भगवान राम लोगों के मानस में अंकित हैं। फादर कामिल बुल्के कहते हैं, "मानव ह्रदय को आकर्षित करने की जो शक्ति रामकथा में विद्यमान है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण में कला तथा आदर्श का जो समन्वय मिलता है उससे आदर्शप्रिय भारतीय जनता प्रभावित हुए बिना न रह सकी।"[10] राम-काव्य तथा राम मर्यादा के प्रतीक माने जाते हैं। आदर्श राज्य या एक आदर्श व्यक्तित्व की जब भी बात होती है, तो उसी परमचेतना (श्रीराम) का उदाहरण दिया जाता है।

जम्मू-कश्मीर में ऐसे कई स्थल हैं, जो प्रचलित लोककथाओं में सीधे राम-कथा से जुड़ती हैं। यह कथाएँ भारत की आध्यात्मिक एकता एवं अखंडता को दर्शाते हैं। उदहारणस्वरूप, सुमवां राम मंदिर, जो जम्मू संभाग के कठुआ जिला मुख्यालय से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक ऐतिहासिक धरोहर है, जिसका

निर्माण 1905 ई. में पूरा हुआ एवं जिसे अभी तक कोई वास्तविक पहचान नहीं मिल पायी है। मंदिर की दीवारों पर रामायण और महाभारतकालीन दृश्यों की पूरी श्रृंखला को बखूबी उकेरा गया है। कश्मीर के बड़गाम जिले का सुथारन गाँव 'सीताहरण' नाम से भी जाना जाता है। लोककथाओं के अनुसार यही वह जगह है, जहाँ से रावण ने माता सीता का हरण किया था। बड़गाम में ही कानेचेत पुर नामक एक जगह है, जो शूर्पणखा को संदर्भित करता है। माना जाता है कि यहीं लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक और कान काट दिए गए थे। उत्तरी कश्मीर में कुपवाड़ा के मुख्य केंद्र से कुछ दूरी पर फारकिन नामक एक स्थान है, जहां स्थानीय पर्वत शृंखला को आज भी 'राजा राम की लाडी' के नाम से जाना जाता है। उस क्षेत्र के निकट सीता के नाम पर एक तालाब है और इसे 'सीता सारी' कहा जाता है। काजीगुंड के शंकरपुर क्षेत्र में एक झरना है, जिसे 'राम कुंड' कहा जाता है। मान्यता है कि अगर आप माता सीता को झरने पर बुलाएंगे और कहेंगे कि राम जू आ गए हैं, तो पानी के बुलबुले उठेंगे। रफियाबाद के खुशीपोरा के पास एक जगह है, जिसे राम सेंज खान अर्थात् राम की खान कहा जाता है। बारामुला जिले में दांगीवाचा नामक एक जगह है, जो राजस्व अभिलेखों में आज भी दंडक वन के नाम से जाना जाता है। अनंतनाग में भगवान विष्णु को समर्पित एक तीर्थ, जो विष्णुपाद या कौसरनाग झील नाम से जाना जाता है। इनके अलावा श्रीनगर में ऐसे कई सारे मंदिर हैं, जो राम और हनुमान को समर्पित हैं, जैसे- गदाधर मंदिर, सोकालिपोरा का रामा कौल मंदिर, नौहट्टा का श्री राम मंदिर, राजबाग़ का हनुमान मंदिर आदि।

निष्कर्षतः भारत विविधताओं वाला देश होते हुए भी कई मायनों में एकता के सूत्र से बंधा हुआ है। उनमें से एक है आध्यात्मिक एकता का सूत्र। लोकमानस में राम की चेतना विविध रूपों में सदियों से विराजमान है। उनके आदर्श रूप ने लोगों को मानवीयता का पाठ पढ़ाया। भारत का एक अभिन्न हिस्सा रहा जम्मू-कश्मीर और यहाँ का साहित्य भी इस परम चेतना से अलग न रह सका। चाहे संस्कृत हो, या फिर कश्मीरी या डोगरी साहित्य, राम-काव्य एवं उनका आदर्श कुछ काल्पनिक उद्भावनाओं एवं प्रासंगिक परिवर्तनों के साथ उपस्थित हुआ है। कह सकते हैं कि भारत की अक्षुण्णता को बनाये रखने के लिए जम्मू-कश्मीर के राम-काव्य को प्रकाश में लाना महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ सूची:-

1. तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2018, पृ. सं. 17
2. तोषखानी, शशिशेखर, कश्मीरी साहित्य का इतिहास, जे.एण्ड के. अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, जम्मू, 1985, पृ.सं. 135
3. रैणा, शिबन कृष्ण, कश्मीर: साहित्य और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, 2022, पृ.सं. 83
4. रैणा, शिबन कृष्ण, कश्मीर: साहित्य और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, 2022, पृ.सं. 87
5. रैणा, शिबन कृष्ण, कश्मीर: साहित्य और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, 2022, पृ.सं. 89
6. Rai, Mridu, Hindu Rulers, Muslim Subjects, Permanent Black Publication, 2012, पृ.सं. 126
7. बुल्के, फ़ादर कामिल, रामकथा उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद्, प्रयाग विवि, प्रयाग, 2004, पृ. सं. 116
8. घई, प्रो. वेदकुमारी, नीलमत पुराण, जे. एण्ड के. अकैडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, 2016, पृ.सं. 133
9. घई, प्रो. वेदकुमारी, नीलमत पुराण, जे. एण्ड के. अकैडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, 2016, पृ.सं. 133
10. बुल्के, फ़ादर कामिल, रामकथा उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद्, प्रयाग विवि, प्रयाग, 2004, पृ. सं. 593

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली

फ़ोन- 8800886848

शोधार्थी, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,

जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय।